दिनाँक :- 16-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ॰ फारूक आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- 12th (अनुशांगिक)

विषय :- प्राचीन इतिहास

इकाई :- पाँच

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- लौह युगीन संस्कृतिया

चित्रित धूसर मृदभाण्ड, ताम्र तथा कांस्य के प्रयोग के पश्चात् मनुष्य के लौह धातु का ज्ञान प्राप्त कर इसका प्रयोग अस्त्र शस्त्र एंव कृषि उपकरणो के निर्माण मे किया। इसके फलस्वरूप मानव जीवन मे क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ। उत्खनन के परिणामस्वरूप भारत के उत्तरी, पूर्वी, मध्य तथा दक्षिणी भागो के लगभग

सात सौ से भी अधिक पुरास्थलो मे अहिच्छत्र, अल्लाह
पुर (मेरठ). खलीआ, नोह लौह उपकरणो के प्रयोग के
साक्ष्य प्रकाश मे आये है। उत्तर भारत के प्रमुख स्थल
अंतरजीखेड़ा, आलमगीरपुर अहिच्छत्र, अल्लाहपुर (मेरठ)
खलीआ नोह, रोपड़, बटेश्वर, हस्तिनापुर श्रावस्ती, कम्पिल
जखेड़ा आदि है। इसमें मृदभाण्ड (Painted Grey ware)
है। इसके साथ लोहे के विविध उपकरण जैसे भाले
बाणाग्र, कुल्हाड़ी, कुदाल दराँती, चाकू, फलक, कीले
पिन चिमटा बसूला आदि मिले है। हस्तिनापुर तर अंतर
जीखेड़ा से धातुमल (Iron slag) मिलता है जिससे
सूचित होता है कि धातु को गलाकर ढलाई की जाती
थी। चित्रित धूसर पात्र परम्परा की तिथि रेडियो
कार्बन पद्धति के आधार पर ईसा पूर्व आठवीं
नवी निर्धारित की गयी है।

लोह तथा इसके दोआब क्षेत्र के काले और लाल मृदभाण्ड (Black and Red Ware) के साथ लोहा प्राप्त हुआ है जिसकी संभावित तिथी ईस्सा पूर्व 1500 के लगभग है। भगवानपुर, माण्डा, दधेरी, आलमगीरपुर, रोपड़ आदि में चित्रित धूसर भाण्ड जिसका संबंध लोहे के माना जाता था। सैन्धव सभ्यता के पतन के तत्काल बाद (लगभग 1700 ई० पू० मिल जाते हैं।

पूर्वी भारत के प्रमुख लौहकालीन स्थल है। पाण्डु राजार दिवि महिषदाल सोनपुर चिरान्द आदि। यहाँ लौह उपकरण काले और लाल मृदभाण्डो के साथ मिले है। इनमें बाणाग्र छेनियाँ कीलें आदि है। महिषदाल से धातुगल तथा गठिया मिलती है जिनमें सूचित होता है कि धातु को स्थानीय रूप से गला कर उपकरण तैयार किये जाते थे। रेडियो कार्बन तिथियों के आधार

Scanned with CamScanner

पर यहां लौह का प्रारंभ ईसा पूर्व 750-700 निर्धारित किया गया है। दक्षिणी पूर्वी उत्तर प्रदेश के विविध स्थलों झूंसी (इलाहाबाद) राजा नल का टीला (सोनभद्र) मल्हार (चन्दौली) आदि से प्राप्त पुरानिधियों के आधार पर लौह की प्राचीनता ई० पू० 1500 तक जाती है।

मध्य भारत (मालवा) तथा राजस्थान के कई पुरास्थलों की खुदाई से लौह उपकरण प्रकाश में आये हैं। मध्य भारत के प्रमुख पुरास्थल एरण तथा नागदा हैं। यहां से लौह निर्मित कुल्हारी कटारे, कुल्हाड़ी, बाणाग्र हंसिया, चाकू आदि मिलते हैं। एरण तथा तथा नगदा में ताम्रपाषाणिक संस्कृति है जिसमें बाद में लोहा जुड़ गया। प्रारंभ में ऐसा माना जाता था कि एरण तथा नगदा में ताम्रपाषाणिक संस्कृति के तत्काल बाद ऐतिहासिक युग प्रारंभ हो गया लगभग 700-600) ईसा पूर्व तथा इसी में लौह

Scanned with CamScanner

का प्रयोग प्रारंभ हुआ। इसी में लोहे का प्रयोग होने लगा। किंतु अब यह स्पष्ट होता है कि दोनों के बीच कुछ व्यवधान था। इसी व्यवधान काल में लोहे का प्रयोग प्रारंभ हुआ। एन० आर० बनर्जी ने इसकी तिथि ईसा पूर्व 800 निर्धारित की है। स्तर में लौहकालीन स्तर की तीन रेडियो कार्बन तिथियाँ निर्धारित की गयी हैं

① ईसा पूर्व 1505 ± 110 (TF - 326)

② ईसा पूर्व 1270 ± 110 (TF - 324)

③ ईसा पूर्व 1239 ± 79 (TF - 525)

डी के० चक्रवर्ती इसकी तिथि ई० पू० 1100 निर्धारित करते हैं। उल्लेखनीय है कि इसी के समीपवर्ती राजस्थान के अहाड़ नामक पुरास्थल से लोहा तथा धातु मल प्रथम काल 2 b के दूसरे स्तर के पाँच निक्षेपों से मिलता है जिसकी संभावित तिथि ईसा पूर्व 1500

के लगभग निश्चित की गयी है।

दक्षिण भारत के आन्ध्र, कर्नाटक, केरल तथा तमिलनाडु के विविध पुरास्थलों से वृहत् अश्म/महापाषाणिक (मेगालिथिक) संस्कृतियों के साक्ष्य मिलते हैं, ब्रह्मगिरी, मास्की पुदुकोटकोट्टै, चिंगलपुत्त, शानूर हल्लूर आदि महत्वपूर्ण स्थल है। इन स्थलों से प्राप्त महापाषाणिक समाधियों से बड़ी संख्या में लौह उपकरण जैसे तलवार, कटार, त्रिशूल चिपटी कुल्हाड़ियाँ, फावड़े, छेनी, बसूली, हंसिया, चाकू भाले आदि लगभग तैंतीस प्रकार के उपकरण काले तथा लाल रंग के मृद्भाण्डों के साथ मिले हैं। हल्लूर नवपाषाण एवं महापाषाण के बीच एक संक्रांति काल की सूचना देता है विभिन्न पुरास्थलों से प्राप्त उपकरणों को भिन्न-भिन्न तिथिक्रमों में रखा गया है, ह्वीलर इस संस्कृति की प्राचीनतम तिथि ईसा पूर्व तीसरी-दूसरी शती निर्धारित

Scanned with CamScanner

करते है किंतु आधुनिक शोधो से जो प्रमाण उपलब्ध हुए है। उनके अधार पर दक्षिण मे लौह उपकरणो के प्रयोग की प्राचीनतम काफी पीछे तक जाती है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि दक्षिण मे लोहे के उपकरणो के प्रयोग की प्राचीनता काफी पीछे तक जाती है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि दक्षिण मे लोहे का प्रयोग सहस्त्राब्दि ईसा पूर्व में प्रारंभ हो गया था। हल्लूर उपकरणो की रेडियो कार्बन तिथि ईसा पूर्व 1000 के लगभग निर्धारित की गई है।

भारत के लोहे की प्राचीनता के विषय मे विवाद है। पहले ऐसा माना जाता था कि मध्य एशिया की हित्ती जाति ई० पू० 1800-1200 का इस पर एकाधिकार था और सर्वप्रथम उसी ने इसका प्रयोग किया। किन्तु अब इस सम्बंध मे नवीन साक्ष्यो के मिले है।

Scanned with CamScanner